जीवविचार।

वीर संवत् २४५१

जीवविचार.

(हिन्दी-भाषानुवाद-सहित)

प्रकाशक,—

मंत्री, श्रीपार्श्वचंद्रगच्छीय गणिश्री कुशलचंदजी
पुस्तकालय, बीकानेर

वीर संवत् २४५१.

धन्यवाद ।

—:०:—

साध्वीजी महाराज श्री १००८ श्री प्रमोदश्रीजीकी
शिष्या साध्वीजी श्री १०८ श्री दयाश्रीजी शी-
तलश्रीजी और रामश्रीजीके उपदेशसे बीका-
नेर निवासी सेठ श्रीछगनमलजी गोलेछाकी
धर्मपत्नी श्रीमती भूरीबाईने अपने स्व०
पुत्र कन्हैयालालके स्मरणार्थ इस पु-
स्तकको छपवानेके लिए १५०)
रु. की सहायता दी इस लिए
हम उन्हें धन्यवाद
देते हैं ।

प्रकाशक ।

जीवविचार।

हिन्दी-भाषानुवादसहित

ग्रंथकारका मंगलाचरण।

भुवणपईवं वीरं,
नमिऊण भणामि अबुहबोहत्थं।
जीवसरूवं किंचिवि,
जह भणियं पुव्वसूरीहिं ॥ १ ॥

(भुवणपईवं) संसारमें दीपकके समान, (वीरं) भगवान् महावीरको, (नमिऊण) नमस्कार करके, (अबुहबोहत्थं) अज्ञ लोगोंको ज्ञान करानेके लिये, (पुव्वसूरीहिं) पुराने आचार्योंने, (जहभणियं) जैसा कहा है वैसा, (जीवसरूवं) जीवका स्वरूप, (किंचिवि) सङ्क्षेपसे, (भणामि) मैं कहता हूँ॥ १॥

जीवके भेद।

जीवा मुत्ता संसारिणोय,
तस थावरा य संसारी।
पुढवी जल जलण वाऊ,
वणस्सई थावरा नेया ॥ २ ॥

(जीवा) जीव, (मुत्ता) मुक्त (य) और (संसारिणो) सारी हैं। (तस) त्रस जीव, (य) और (थावरा) स्थावर व, (संसारी) संसारी हैं। (पुढवि जल जलण वाऊ वण-

स्सई) पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और वनस्पतिको (थावरा) स्थावर, (नेया) जानना ॥ २ ॥

पृथ्वीकायके भेद।

फलिहमणि रयण विद्दुम,
हिंगुल हरियाल मणसिल रसिंदा।
कणगाइ धाउ सेढी,
वन्निअ अरणेट्टय पलेवा ॥ ३ ॥
अब्भय तूरी ऊसं,
मट्टी पाहाण जाइओ णेगा।
सोवीरंजण लूणाइ,
पुढवि भेआइ इच्चाई ॥ ४ ॥

(फलिह) स्फटिक, (मणि) मणि—चन्द्रकान्त आदि, (रयण) रत्न—वज्रकर्केतन आदि, (विद्दुम) मूंगा, (हिंगुल) हिङ्गुल, ईंगूर, (हरियाल) हरताल, (मणसिल,) मैनसिल—मनःशिला, (रसिंद) रसेन्द्र—पारा—पारद, (कणगाइ धाउ) कनक आदि धातु—सोना, चाँदी, ताँबा, लोहा, राँगा, सीसा और जस्ता, (सेढ़ी) खटिका—खड़िया, (वन्निअ) वर्णिका—लाल रङ्गकी मिट्टी, (अरणेट्टय) अरणेट्टक—पत्थरोंके टुकड़ोंसे मिली हुई सफेद मिट्टी, (पलेवा) पलेवक—एक किस्मका पत्थर ॥ ३ ॥ (अब्भय) अभ्रक—अबरक, भोडल (तूरी) एक किस्मकी मिट्टी, (ऊसं) क्षार भूमिकी—ऊसरकी मिट्टी; (मट्टी पाहाण जाइओ णेगा) मिट्टी और पत्थरकी अनेक जा-

तियाँ, (सोवीरंजण) सुरमा, (लूणाई) लवण–नमक, (इच्चाई) इत्यादि (पुढवि भेआइ) पृथ्वीकाय जीवोंके भेद हैं ॥ ४ ॥

जलकाय जीवोंके भेद ।

भोमंतरिक्ख मुदगं,
ओसाहिम करग हरितणू महिआ ।
हुंति घणोदहि माई,
भेआणेगा य आउस्स ॥ ५ ॥

(भोमं) भूमिका–कूआ, तालाव आदिका जल, (अंतरिक्ख मुदगं) अन्तरिक्षका–आकाशका जल, (ओसा) ओस, (हिम) वर्फ, (करग) ओले, (हरितणू) हरित वनस्पतिके–खेतमें बोये हुए गेहूँ जव आदिके–वालों पर जो पानीकी बूँदें होती हैं, वे, (महिया) महिमा–छोटे छोटे जलके कण जो बादलोंसे गिरते हैं, (घणोदहि माई) घनोदधि आदि, (आउस्स) अप्काय जीवके, (भेआणेगा) अनेक भेद, (हुंति) होते हैं ॥ ५ ॥

अग्निकाय-जीवोंके भेद ।

इंगाल जाल मुम्मुर,
उक्कासणि कणग विज्जुमाईआ ।
अगणिजियाणं भेआ,
नायव्वा निउणवुद्धी ए ॥ ६ ॥

(इंगाल) अंगार–ज्वालारहित काष्ठकी अग्नि, खीरा, (जाल) ज्वाला, लपटें (मुम्मुर) कण्डेकी अथवा भरसाँयकी गरम राखमें रहनेवाले अग्निकण, (उक्का) उल्का–आकाशसे जो

अग्निकी वर्षा होती है वह, (असणि) अशनि-वज्रकी अग्नि, (कणग) आकाशमें उड़नेवाले अग्नि-कण, (विज्जुमाईआ) विजलीकी अग्नि इत्यादि, (अगणिजिआणं) अग्निकाय जीवोंके (भेआ) भेद (निउण बुद्धीए) निपुण-बुद्धिसे-सूक्ष्मबुद्धिसे (नायव्वा) जानना ॥ ६ ॥

वायुकाय-जीवोंके भेद।

उब्भामग उक्कलिया,
मंडलि मुह सुद्ध गुंज वायाय।
घणतणु वायाईया,
भेया खलु वाउकायस्स ॥ ७ ॥

(उब्भामग) उद्भ्रामक-तृण आदिको आकाशमें उड़ानेवाला वायु, (उक्कलिया) उत्कलिका-नीचे बहनेवाला वायु जिससे धूलिमें रेखायें हो जाती हैं, (मंडलि) गोलाकार बहनेवाला वायु, (मह) महावात-आँधी, (शुद्ध) शुद्ध-मन्द वायु, (गुंजवायाय) और गुञ्जवायु-जिसमें गूँजनेकी आवाज होती है, (घणतणु वायाईया) घनवात, तनुवात आदि, (वाउकायस्स) वायुकायके (भेया) भेद हैं ॥ ७ ॥

वनस्पतिकाय-जीवोंके भेद।

साहारण पत्तेआ,
वणस्सइ जीवा दुहा सुए भणिआ।
जेसिमणंताणं तणु,
एगा साहारणा तेऊ ॥ ८ ॥

(सुए) श्रुतमें—शास्त्रमें, (वणसइ जीवा) वनस्पति कायके जीव, (साहारण पत्तेआ) साधारण और प्रत्येक ऐसे, (दुहा) दो प्रकारके (भणिया) कहे गये हैं। (जेसिमणंताणं) जिन अनन्त जीवोंका (एगा) एक (तणु) शरीर हो, (तेऊ) वे (साहारणा) साधारण कहलाते हैं ॥ ८ ॥

साधारण-वनस्पति-कायके भेद।

कंदा अंकुर किसलय,
पणगा सेवाल भूमिफोडा अ।
अल्लय तिय गज्जर मोत्थ,
वत्थुला थेग पल्लंका ॥ ९ ॥

कोमल फलं च सव्वं,
गूढसिराइं सिणाइपत्ताइं।
थोहरि कुंआरि गुग्गुलि,
गलोय पमुहाइ छिन्नरुहा ॥ १० ॥

इच्चाइणो अणेगे,
हवंति भेया अणंतकायाणं।
तेसिं परिजाणणत्थं
लक्खणमेयंसुए भणियं ॥ ११ ॥

(कंदा) कन्द—आलू, सूरन, मूलीका कन्द आदि, (अंकुर) अङ्कुर, (किसलय) नये कोमल पत्ते, (पणगा सेवाल) पाँच रंगकी फूलण, फुल्लि-जो कि वासी अन्नमें पैदा होती है, और सिवार (भूमिफोडा) भूमिस्फोट,—वर्षा ऋतुमें छत्रके आकारकी

वनस्पति होती है, (अल्लयतिय) अद्रक, हल्दी और कर्चूक, (गज्जर) गाजर, (मोत्थ) नागरमोथा, (वत्थुला) बथुआ, (थेग) एक किस्मका कन्द, (पल्लंका) पालक—शाकविशेष ॥ ९ ॥ (कोमल फलंच सव्वं) सब तरहके कोमल फल- जिनमें बीज पैदा न हुये हों, (गूढ सिराइं सिणाइ पत्ताइं) जिनकी नसें प्रकट न हुई हों वे, तथा सन आदि के पत्ते, (थोहरि) थूहर, (कुंआरि) घीकुवार, गवारपाठा (गुग्गुलि) गुग्गुल, गूगल (गलोय) गिलोय—गुर्च, (पमुहाइ) आदि, (छिन्नरुहा) छिन्नरुह—काटने पर भी ऊगनेवाली कुछ वनस्पतियाँ ॥ १० ॥ (इच्चाइणो) इत्यादि, (अणेगे) अनेक (भेया) भेद, (अणंतकायाणं) अनन्तकाय जीवोंके, (हवंति) हैं। (तेसिं) उनके, (परिजाणणत्थं) अच्छी तरह जाननेके लिये, (सुए) श्रुतमें—शास्त्रमें, (एयं) यह (लक्खणं) लक्षण, (भणियं) कहा है ॥ ११ ॥

अनन्तकायका लक्षण।

गूढसिरसंधिपव्वं,
समभंग महीरगं च छिन्नरुहं ।
साहारणं सरीरं,
तव्विवरीअं च पत्तेयं ॥ १२ ॥

जिनकी (सिर) नसें, (संधि) सन्धियाँ, और (पव्वं) —गाँठें, (गूढ) गुप्त हों,—देखनेमें न आवें, (समभंगं) जिनको तोड़नेसे समान टुकड़े हों, (अहीरगं) जिनमें तन्तु न हों, (छिन्नरुहं) जो काटने पर भी ऊगें ऐसी वनस्पतियाँ—

फल, फूल, पत्तं, जड़ें आदि, (साहारणं) साधारण, (सरीरं) शरीर है। (तव्विवरीअं च) और उससे विपरीत, (पत्तेयं) प्रत्येक-वनस्पति-काय है ॥ १२ ॥

प्रत्येक-वनस्पति-कायके लक्षण और भेद।

एगसरीरे एगो,
जीवो जेसिं तु ते य पत्तेया।
फल फूल छल्लि कट्ठा,
मूलगपत्ताणि बीयाणि ॥ १३ ॥

(जेसिं) जिनके (एगसरीरे) एक शरीरमें (एगो जीवो) एक जीव हो (ते तु) वे तो (पत्तेया) प्रत्येक-वनस्पति-काय हैं; उनके सात भेद हैं (फल, फूल, छल्लि, कट्ठा) फल, पुष्प, छाल, काष्ठ, (मूलग) जड़ें, (पत्ताणि) पत्ते, और (बीयाणि) बीज ॥ १३ ॥

पृथ्वीकाय आदि जीवोंके आयु, शरीर और निवासस्थान।

पत्तेयं तरु मोत्तु,
पंचवि पुढवाइणो सयल लोए।
सुहुमा हवंति नियमा,
अंतमुहुत्ताउ अद्दिस्सा ॥ १४ ॥

(पत्तेयं तरु) प्रत्येक-वनस्पति-कायको (मोत्तुं) छोड़कर, (पंचवि) पाँचोंही (पुढवाइणो) पृथ्विकाय आदि, (सुहुमा) सूक्ष्म-स्थावर (सयल लोए) सम्पूर्ण लोकमें (हवंति) विद्यमान हैं—रहते हैं—और वे (नियमा) नियमसे, (अंतमुहु-ताउ)

अन्तर्मुहूर्त आयुष्यवाले होते हैं, तथा (अदिस्सा) अदृश्य हैं-आँखसे देखनेमें नहीं आते हैं ॥ १४ ॥

द्वीन्द्रीय जीवोंके भेद।

संख कवड्डुय गंडुल,
जलोय चंदणग अलस लहगाई।
मेहरि किमि पूयरगा,
बेइंदिय माइवाहाई ॥ १५ ॥

(संख) शङ्ख–दक्षिणावर्त आदि, (कवड्डुय) कपर्दक–कौड़ी, (गंडुल) गण्डोल–जो पेटमें मोटे कृमि मल्हप–पैदा होते हैं, (जलोय) जलौका–जोंक, (चंदणग) चन्दनक–अक्ष–जिसके निर्जीव शरीरको साधु लोग स्थापनाचार्यमें रखते हैं, (अलस) भूनाग जो वर्षाऋतुमें साँप सरीखे लंबे लाल रंगके जीव पैदा होते हैं, (लहगाई) लहक–लालीयक–जो बासी रोटी आदि अन्नमें पैदा होते हैं, (मेहरि) काष्ठके कीड़े, (किमि) कृमि–पेटमें, फोड़ेमें तथा बवासीर आदिमें पैदा होते हैं, (पूअरगा) पूतरक–पानीके कीड़े, जिनका मुँह काला और रंग लाल वा श्वेत प्रायः होता है, (माइवाहाई) मातृवाहिका–जिसकी गुजरातमें अधिकता है और वहाँके लोग चूड़ेल कहते हैं, इत्यादि (बेइंदिय) द्वीन्द्रीय जीव हैं। ॥ १५ ॥

तीन इन्द्रिय जीवोंके भेद।

गोमी मंकण जूआ,
पिपीलि उद्देहिया य मक्कोडा।
इल्लिय घयमिल्लीओ,
सावय गोकीड जाईओ ॥ १६ ॥

गद्दहय चोरकीडा,
गोमयकीडा य धन्नकीडा य ।
कुंथु गुवालिय इलिया,
तेइंदिय इंदगोवाई ॥ १७ ॥

(गोमी) गुल्मि—कानखज़ूरा, (मंकण) मत्कुण—खटमल, (जूआ) यूका—ज़ूँ, (पिपीलि) पिपीलिका—चींटी, (उद्देहिया) उपदेहिका—दीमक (मक्कोड़ा) मत्कोटक—मकोड़ा, (इल्लिय) इल्लिका—अल्ली, जो अनाजमें पैदा होती है, (घयमिल्लिय) घृतेलिका—घीमें पैदा होती है, (सावय) चर्मयूका—शरीरमें पैदा होती है, जिससे भविष्यमें अनिष्टकी शङ्का की जाती है, (गोकीड जाईओ) गोकीटकी जातियाँ अर्थात् पशुओंके कान आदि अवयवोंमें पैदा होनेवाले जीव ॥ १६ ॥ (गद्दहय) गर्दभक—गोशाला आदिमें पैदा होनेवाले सफेद रंगके जीव, (चोरकीडा) चोरकीट—विष्ठाके कीड़े, (गोमयकीडा) गोमयकीट—गोबरके कीड़े, (धन्नकीडा) धान्यकीट—अनाजके कीड़े, (कुंथु) कुन्थु—एक किस्मका कीड़ा. (गुवालिय) गोपालिका—एक किस्मका अप्रसिद्ध जीव, (इलिया) ईलिका—शक्कर और चावलमें पैदा होती है, (इंदगोवाई) इन्द्रगोप—वर्षामें लाल रंगका जीव पैदा होता है जिसे पंजाबी चीजव्होटी, और गुजराती गोकलगाय कहते हैं—इत्यादि (तेइंदिय) त्रीन्द्रिय जीव हैं ॥ १७ ॥

चतुरिन्द्रिय जीवोंके भेद।

चउरिंदिया य विच्छू,
ढिंकुण, भमरा य भमरिया तिड्डा ।

मच्छिय डंसा मसगा,
कंसारी कविलडोलाई ॥ १८ ॥

(विच्छू) विच्छू, (ढिंकुण) ढिङ्कुण–घुड़साल आदिमें पैदा होता है, (भमरा) भ्रमर–भौंरा, (भमरिया) भ्रमरिका–चरें, (तिड्डा) टिड्डी–टीढ़ी, (मच्छिय) मक्षिका–मक्खी, मधुमक्खी, (डंसा) दंश–डाँस, (मसगा) मशक–मच्छर, (कंसारी) कंसारिका–उजाड जगहमें पैदा होती है, (कविल डोलाई) कपिलडोलक–एक किस्मका जीव जिसे गुजराती खड़माँकडी कहते हैं, इत्यादि (चउरिंदिया) चतुरिन्द्रिय जीव हैं ॥ १८ ॥

पञ्चेन्द्रिय जीवोंके और पंचेन्द्रिय नारक के भेद ।

पंचिंदिया य चउहा,
नारय तिरिया मणुस्स देवा य ।
नेरइया सत्तविहा,
नायव्वा पुढविभेएणं ॥ १९ ॥

(पंचिंदिया) पञ्चेन्द्रिय जीव (चउहा) चतुर्धा–चार प्रकारके हैं (नारय) नारक, (तिरिया) तिर्यञ्च, (मणुस्स) मनुष्य (य) और (देवा) देव (नेरइया) नैरयिक–नरकमें रहनेवाले जीव (पुढविभेएणं) पृथ्वीके भेदसे (सत्तविहा) सप्तविधा–सात प्रकारके (नायव्वा) जानना ।

पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्चके भेद ।

जलयर थलयर खयरा,
तिविहा पंचेंदिया तिरिक्खा य ।

सुसुमार मच्छ कच्छव,
गाहा मगराइ जलचारी ॥ २० ॥

(जलयर) जलचर, (थलयर) स्थलचर, (खयरा) खेचर (पंचेंदिया) पञ्चेन्द्रिय (तिरिक्खा) तिर्यञ्च (तिविहा) त्रिविध अर्थात् तीन प्रकारके हैं। (जलचारी) जलमें रहनेवाले (सुसुमार) शिशुमार—सुईस, जिसका आकार भैंस जैसा होता है; (मच्छ) मत्स्य—मछली, (कच्छव) कच्छप—कछुआ, (गाहा) ग्राह—घड़ियाल, (मगराइ) मकर—मगर आदि हैं।

स्थलचर जीवोंके भेद।

चउपय उरपरिसप्पा,
भुयपरिसप्पा य थलयरा तिविहा।
गोसप्प नउल पमुहा,
बोधव्वा ते समासेणं ॥ २१ ॥

(थलयरा) स्थलचर जीव (तिविहा) त्रिविध अर्थात् तीन प्रकारके हैं; (चउपय) चतुष्पद—चार पैरसे चलनेवाले, (उरपरिसप्पा) उरःपरिसर्प—छातीसे—पेटसे चलनेवाले (य) और (भुयपरिसप्पा) भुजपरिसर्प—भुजाओंसे चलनेवाले, (गो) गाय, (सप्प) साँप, (नउल) नकुल—न्योला (पमुहा) प्रमुख—आदि (ते) वे (समासेणं) समाससे—सङ्क्षेपसे (बोधव्वा) जाननें ॥ २१ ॥

खेचर जीवोंके भेद।

खयरा रोमय पक्खी,
चम्मय पक्खी य पायड़ा चेव।

नरलोगाओ बाहिं,
समुग्गपक्खी वियय पक्खी ॥ २२ ॥

(खयरा) खेचर–आकाशमें उड़नेवाले जीव (रोमयपक्खी) रोमजपक्षी (य) और (चम्मयपक्खी) चर्मजपक्षी (पायड़ा) प्रकट हैं–प्रसिद्ध हैं. (नरलोगाओ) नरलोकसे–मनुष्यलोकसे (बाहिं) बाहर (समुग्गपक्खी) समुद्गपक्षी और (वियय पक्खी) विततपक्षी हैं ॥ २२ ॥

तिर्यञ्च और मनुष्यके भेद।

सव्वे जल थल खयरा,
संमुच्छिमा गब्भया दुहा हुंति ।
कम्मा कम्मग भूमि,
अंतरदीवा मणुस्सा य ॥ २३ ॥

(सव्वे) सब (जलथलखयरा) जलचर, स्थलचर, और खेचर (संमुच्छिमा) सम्मूर्च्छिम, (गब्भया) गर्भज (दुहा) द्विधा–दो प्रकारके (हुंति) होते हैं। (मणुस्सा) मनुष्य (कम्मा कम्मग भूमि) कर्मभूमिज, अकर्मभूमिज (य) और (अंतरदीवा) अन्तर्द्वीपवासी हैं ॥ २३ ॥

देवताओंके भेद।

दसहा भवणाहिवई,
अट्ठविहा वाणमंतरा हुंति ।
जोइसिया पंचविहा,
दुविहा वेमाणिया देवा ॥ २४ ॥

(भवणाहिवई) भवनाधिपति देवता, (दसहा) दशधा–दस प्रकारके हैं, (वाणमंतरा) वाणव्यन्तर देवता, (अट्ठविहा) अष्टविधा–आठ प्रकारके, (हुंति) होते हैं, (जोइसिया) ज्योतिष्का–ज्योतिष्क देवता, (पंचविहा) पञ्चविधा–पाँच प्रकारके हैं, और (वेमाणिया देवा) वैमानिक देवता, (दुविहा) दो प्रकारके हैं ॥ २४ ॥

सिद्ध जीवोंके भेद।

सिद्धा पनरस भेया,
तित्थ अतित्थाइ सिद्ध भेएणं।
एए संखेवेणं,
जीववियप्पा समक्खाया ॥ २५ ॥

(तित्थ अतित्थाइ सिद्ध भेएणं) तीर्थङ्कर–सिद्ध, अतीर्थङ्कर–सिद्ध आदि भेदोंसे, (सिद्धा) सिद्ध–जीवोंके, (पनरस भेया) पन्द्रह भेद हैं। (संखेवेणं) सङ्क्षेपसे, (एए) ये—पूर्वोक्त, (जीववियप्पा) जीव विकल्प–जीवोंके भेद, (समक्खाया) कहे गये ॥ २५ ॥

जीव संबंधी विशेष ज्ञान करानेके लिए ग्रन्थकारका वस्तुनिर्देश।

एएसिं जीवाणं,
सरीरमाऊ ठिई सकायंमि।
पाणा जोणिपमाणं,
जेसिं जं अत्थि तं भणिमो ॥ २६ ॥

(एएसिं) इन–पूर्वोक्त, (जीवाणं) जीवोंके, (सरीरं) शरीर–प्रमाण, (आऊ) आयुःप्रमाण, (सकायंमि) स्व–का-

यामें, (ठिई) स्थितिका प्रमाण अर्थात् स्वकायस्थिति-प्रमाण, (पाणा) प्राण-प्रमाण और (जोणिपमाणं) योनि-प्रमाण, (जेसिं) जिनके, (जं अत्थि) जितने हैं, (तं) उसे, (भणिमो) कहते हैं ॥ २६ ॥

शरीर-प्रमाण ।

अंगुल असंखभागो,
सरीरमेगिंदियाण सव्वेसिं ।
जोयणसहस्स महियं,
नवरं पत्तेय रुक्खाणं ॥ २७ ॥

(सव्वेसिं) सम्पूर्ण (एगिंदियाण) एकेन्द्रियोंका (सरीरं) शरीर (अंगुल असंखभागो) उँगलीके असंख्यातवें भाग जितना है (नवरं) लेकिन (पत्तेय रुक्खाणं) प्रत्येक-वनस्पतिके जीवोंका शरीर, (जोयण सहस्स महियं) हजार योजनसे कुछ अधिक होता है ॥ २७ ॥

द्वीन्द्रिय आदि विकलेन्द्रिय जीवोंका शरीर-प्रमाण ।

बारस जोयण तिन्नि,
व गाउआ जोयणं च अणुकमसो ।
बेइंदिय तेइंदिय,
चउरिंदिय देह मुच्चत्तं ॥ २८ ॥

(बे इंदिय) द्वीन्द्रिय, (ते इंदिय) त्रीन्द्रिय और (चउरिंदिय) चतुरिन्द्रिय जीवोंके, (देहमुच्चत्तं) शरीरका प्रमाण, (अणुकमसो) क्रमसे (बारस जोयण) बारह योजन, (तिगाउआ) तीन गव्यूत-तीन कोस-और (जोयणं) एक है ॥ २८ ॥

नारक-जीवोंका शरीर-प्रमाण।

धणुसय पंच पमाणा,
नेरइया सत्तमाइ पुढवीए।
तत्तो अद्धद्धूणा,
नेया रयणप्पहा जाव ॥ २९ ॥

(सत्तमाइ) सातवीं (पुढवीए) पृथ्वीके (नेरइया) नारक-जीव, (धणुसय पंच पमाणा) पाँचसौ धनुष प्रमाणके हैं, (रयणप्पहा जाव) रत्नप्रभा नामक प्रथम पृथ्वीतक, (तत्तो) उससे (अद्धद्धूणा) आधा आधा कम प्रमाण (नेया) समझना ॥२९॥

पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्चोंका शरीर प्रमाण।

जोयणसहस्समाणा,
मच्छा उरगा य गब्भया हुंति।
धणुअपुहुत्तं पक्खिसु,
भुयचारी गाउअपुहुत्तं ॥ ३० ॥
खयरा धणुअपुहुत्तं,
भुयगा उरगा य जोयणपुहुत्तं।
गाउअपुहुत्तमित्ता,
समुच्छिमा चउप्पया भणिया ॥३१॥

(गब्भया) गर्भज (मच्छा) मत्स्य-मछलियाँ (य) और (उरगा) साँप आदि, अधिकसे अधिक (जोयणसहस्समाणा) हजार योजन प्रमाणवाले होते हैं। (पक्खिसु) पक्षियोंमें शरीर-प्रमाण (धणु अपुहुत्तं) धनुष-पृथक्त्व-दो धनुपसे लेकर नव धनुष तक-है तथा (भुयचारी) भुजचारी-भुजाओंसे चलनेवाले

(गाउ अपुहुत्तं) गव्यूत–पृथक्त्व प्रमाण शरीरके होते हैं ॥३०॥ (समुच्छिमा) सम्मूर्च्छिम (खयरा) खेचर जीव (भुयगा) और भुजाओंसे चलनेवाले जीव (धणुअपुहुत्तं) धनुष–पृथक्त्व प्रमाणवाले होते हैं (य) और (उरगा) साँप आदि (जोयण पुहुत्तं) योजन–पृथक्त्व शरीर–प्रमाणके होते हैं। (चउप्पया) चतुष्पद जीव (गाउअपुहुत्तमित्ता) गव्यूत–पृथक्त्व मात्र (भणिया) कहे गये हैं ॥ ३१ ॥

गर्भज चतुष्पद तिर्यञ्च तथा मनुष्यका शरीर–मान।

छच्चेव गाउआइं,
चउप्पया गब्भया मुणेयव्वा ।
कोसतिगं च मणुस्सा,
उक्कोससरीरमाणेणं ॥ ३२ ॥

(चउप्पया गब्भया) चतुष्पद गर्भजोंका शरीरमान (छच्चेव गाउआइं) छह कोसका है (च) और (मणुस्सा) मनुष्य (उक्कोससरीरमाणेणं) उत्कृष्ट शरीरमानसे (कोसतिगं) तीन कोसके होते हैं ॥ ३२ ॥

देवोंका शरीर–मान।

ईसाणंत सुराणं,
रयणीओ सत्त हुंति उच्चत्तं ।
दुग दुग दुग चउ गेवि,
ज्जणुत्तरे इक्किक्क परिहाणी ॥३३॥

(ईसाणंत) ईशानान्त—ईशान–देवलोक तकके (सुराणं) देवताओंकी (उच्चत्तं) ऊँचाई (सत्त) सात (रयणीओ)

रत्नि—हात (हुंति) होती है; (दुग दुग दुग चउ गेविज्जणु-त्तरे) दो, दो, दो, चार, नव ग्रैवेयक और पाँच अनुत्तरविमानोंके देवोंका शरीर—मान (इक्कि परिहाणी) एक एक हाथ कम है ॥ ३३ ॥

आयु—प्रमाण ।

बावीसा पुढवीए,
सत्तय आउस्स तिन्नि वाउस्स ।
वास सहस्सा दस तरु,
गणाण तेऊ तिरत्ताऊ ॥ ३४ ॥

(पुढवीए) पृथ्वीकाय जीवोंकी आयु (बावीसा) बाईस हजार वर्षकी है (आउस्स) अप्‌काय जीवोंकी आयु (सत्तय) सात हजार वर्षकी (वाउस्स) वायुकाय जीवोंकी आयु (तिन्नि) तीन हजार वर्षकी (तरुगणाण) प्रत्येक—वनस्पति—कायके जीव—समुदायकी आयु (वास सहस्सा दस) वर्ष—सहस्र—दश अर्थात् दस हजार वर्षकी आयु (तेउ) तेजःकाय जीवोंकी (तिरत्ताऊ) तीन अहोरात्रकी आयु है ॥ ३४ ॥

द्वीन्द्रिय आदि जीवोंका आयु—प्रमाण ।

वासाणि बारसाऊ,
बिइंदियाणं तिइंदियाणं तु ।
अउणा पन्न दिणाइ,
चउरिंदीणं तु छम्मासा ॥ ३५ ॥

(बिइंदियाणं) द्वीन्द्रिय जीवोंकी (आउ) आयु (बारस) बारह (वासाणि) वर्षकी है (तिइंदियाणं तु) त्रीन्द्रिय जी-

वोंकी तो (अउणा पन्न दिणाइ) उन्चास ४९ दिनकी आयु होती है (चउरिंदीणं तु) और चतुरिन्द्रिय जीवोंकी आयु (छम्मासा) छः महीने की है ॥ ३५ ॥

पञ्चेन्द्रिय जीवोंकी उत्कृष्ट आयु।

सुर नेरइयाण ठिई,
उक्कोसा सागराणि तित्तीस।
चउपय तिरिय मणुस्सा,
तिन्निय पलिओवमा हुंति ॥३६॥

(सुर नेरइयाण) देव और नारक जीवोंकी (उक्कोसा) उत्कृष्ट—अधिकसे अधिक (ठिई) स्थिति—आयु (सागराणि तित्तीसं) तेतीस सागरोपम है, (चउपय तिरिय) चार पैर-वाले तिर्यञ्च और (मणुस्सा) मनुष्योंकी आयु (तिन्निय) तीन (पलिओवमा) पल्योपम (हुंति) है ॥ ३६ ॥

जलयर उर भुयगाणं,
परमाऊ होइ पुव्व कोडीऊ।
पक्खीणं पुण भणिओ,
असंख भागो अ पलियस्स ॥ ३७ ॥

(जलयर उर भुयगाणं) जलचर, उरःपरिसर्प और भुजपरिसर्प जीवोंकी (परमाऊ) उत्कृष्ट आयु (पुव्व कोडीऊ) करोड़ पूर्व है, (पक्खीणं पुण) पक्षियोंकी आयु तो (पलियस्स) पल्योपमके (असंख भागो) असंख्यातवें भाग जितनी है ॥ ३७ ॥

सव्वे सुहुमा साहा,
रणा य संमुच्छिमा मणुस्सा य।
उक्कोस जहन्नेणं,
अंतमुहुत्तं चिय जियंति ॥ ३८ ॥

(सव्वे) सम्पूर्ण (सुहुमा) पृथ्वीकाय आदि सूक्ष्म (य) और (साहारणा) साधारण वनस्पति काय (य) और (संमुच्छिमा मणुस्सा) संमूर्च्छिम मनुष्य (उक्कोस जहन्नेणं) उत्कृष्ट और जघन्यसे (अंत मुहुत्तं चिय) अन्तर्मुहूर्त ही (जियंति) जीते हैं ॥ ३८ ॥

ओगाहणाउ माणं,
एवसंखवेओ समक्खायं।
जे पुण इत्थ विसेसा,
विसेस सुत्ताउ ते नेया ॥ ३९ ॥

(एवं) इस प्रकार (ओगाहणाउमाणं) अवगाहना-शरीर और आयुका मान (संखेवओ) सङ्क्षेपसे (समक्खायं) कहा गया (जे पुण इत्थ) यहाँ जो बातें विशेष हैं, (विसेससुत्ताउ) विशेष सूत्रोंसे (ते) उनको (नेया) जानना ॥ ३९ ॥

स्वकायस्थितिद्वार।

एगिंदिया य सव्वे,
असंख उस्सप्पिणी सकायंमि।
उववज्जंति चयंति अ,
अणंतकाया अणंताओ ॥ ४० ॥

(सव्वे) सब (एगिंदिया) एकेन्द्रिय जीव (असंख उस्सप्पिणी) असंख्य उत्सर्पिणी तथा अवसर्पिणी तक (सकायंमि)

अपनी कायामें (उववज्जंति) उत्पन्न होते हैं (अ) और (चयंति) मरते हैं; (अणंतकाया) अनन्तकायजीव (अणंताओ) अनन्त उत्सर्पिणी तथा अवसर्पिणी तक ॥ ४० ॥

द्वीन्द्रिय आदि जीवोंकी स्वकाय-स्थिति ।

संखिज्ज समा विगला,
सत्तट्ठ भवा पणिंदि तिरि मणुया ।
उववज्जंति सकाए,
नारय देवा अ नो चेव ॥ ४१ ॥

(विगला) विकलेन्द्रिय जीव (संखिज्ज समा) संख्यात वर्षों तक (सकाए) अपनी कायामें (उववज्जंति) पैदा होते हैं, (पणिंदि तिरि मणुया) पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च और मनुष्य (सत्तट्ट भवा) सात आठ भवतक, लेकिन (नारय देवा) नारक और देव (नो चेव) नहीं ॥ ४१ ॥

प्राण-द्वार ।

दसहा जियाण पाणा,
इंदिय उसासाउ जोगवलरूवा ।
एगिंदिएसु चउरो,
विगलेसु छ सत्त अट्ठेव ॥ ४२ ॥

(जियाण) जीवोंको (दसहा) दस प्रकारके (पाणा) प्राण होते हैं:-(इंदिय उसासाउ जोगबलरूवा) इन्द्रिय, श्वासोच्छ्वास, आयु और योगबल रूप (एगिंदिएसु) एकेन्द्रियोंको (चउरो) चार प्राण हैं, (विगलेसु) विकलेन्द्रियोंको (छ सत्त अट्ठेव) छः सात और आठ ॥ ४२ ॥

असन्नि सन्नि पंचिं,
दिएसु नव दस कमेण बोधव्वा।
तेहिं सह विप्पओगो,
जीवाणं भण्णए मरणं ॥ ४३ ॥

(असन्नि सन्नि पंचिदिएसु) असंज्ञी पञ्चेन्द्रिय तथा संज्ञी पञ्चेन्द्रिय जीवोंको (कमेण) क्रमसे (नवदस) नव और दस प्राण (बोधव्वा) समझना (तेहिं सह) उनके साथ (विप्पओगो) विप्रयोग–वियोग, (जीवाणं) जीवोंका (मरणं) मरण (भण्णए) कहलाता है ॥ ४३ ॥

जीवोंका प्राण–वियोग–रूप मरण कितने वार हुआ है, सो कहते है।

एवं अणोरपारे,
संसारे सायरंमि भीमंमि।
पत्तो अणंतखुत्तो,
जीवेहिं अपत्तधम्मेहिं ॥ ४४ ॥

(अपत्तधम्मेहिं) नहीं पाया है धर्म जिन्होंने ऐसे (जीवेहिं) जीवोंने (अणोरपारे) आर–पार–रहित—आदि–अन्त–रहित (भीमंमि) भयङ्कर (संसारे सायरंमि) संसार–रूप–समुद्रमें (एवं) इस प्रकार—प्राण–वियोग–रूप मरण (अणंतखुत्तो) अनन्तवार (पत्तो) प्राप्त किया ॥ ४४ ॥

योनिद्वार।

तह चउरासी लक्खा,
संखा जोणीण होइ जीवाणं।

पुढवाईण चउण्हं,
पत्तेयं सत्त सत्तेव ॥ ४५ ॥

(जीवाणं) जीवोंकी (जोणीण) योनियोंकी (संखा) संख्या (चउरासी लक्खा) चौरासी लाख (होइ) है। (पुढवाईण चउण्हं) पृथ्वीकाय आदि चारकी प्रत्येककी योनि-संख्या (सत्त सत्तेव) सात-सात लाख है ॥ ४५ ॥

दस पत्तेय तरूणं,
चउदस लक्खा हवंति इयरेसु ।
विगलिंदिएसु दो दो,
चउरो पंचिंदि तिरियाणं ॥ ४६ ॥

(पत्तेय तरूणं) प्रत्येक-वनस्पति-कायकी (दस) दस लाख योनियाँ हैं; (इयरेसु) प्रत्येक वनस्पतिकायसे इतर—साधारण-वनस्पति-कायकी (चउदस लक्खा) चौदह लाख (हवंति) हैं; (विगलिंदिएसु) विकलेन्द्रियोंकी (दो दो) दो दो लाख हैं; (पंचिंदितिरियाणं) पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्चोंकी (चउरो) चार लाख हैं ॥ ४६ ॥

चउरो चउरो नारय,
सुरेसु मणुआण चउदस हवंति ।
संपिंडिया य सव्वे,
चुलसी लक्खाउ जोणीणं ॥ ४७ ॥

(नारय सुरेसु) नारक और देवोंकी (चउरो चउरो) चार चार लाख योनियाँ हैं; (मणुआण) मनुष्योंकी (चउदस) चौदह लाख (हवंति) हैं; (सव्वे) सब (संपिंडिया) इकट्ठी

की जाँय-मिलाई जाँय तो (जोणीणं) योनियोंकी संख्या (चुलसी लक्खाउ) चौरासी लाख होती है ॥ ४७ ॥

सिद्ध जीवोंके विषयमें कहते हैं.

सिद्धाणं नत्थि देहो,
न आउ कम्मं न पाण जोणीओ ।
साइ अणंता तेसिं,
ठिई जिणंदागमे भणिया ॥ ४८ ॥

(सिद्धाणं) सिद्ध-जीवोंको (देहो) शरीर (नत्थि) नहीं है (न आउ कम्मं) आयु और कर्म नहीं हैं (न पाण जोणीओ) प्राण और योनि नहीं है, (तेसिं) उनकी (ठिई) स्थिति (साइ अणंता) सादि और अनन्त है; यह बात (जिणंदागमे) जैन-सिद्धान्तमें (भणिया) कही गई है ॥ ४८ ॥

"फिरसे संसारी-जीवोंका स्वरूप कहते हैं."

काले अणाइनिहणे,
जोणीगहणंमि भीसणे इत्थ ।
भमिया भमिहंति चिरं,
जीवा जिणवयणमलहंता ॥ ४९ ॥

(अणाइ निहणे) आदि और अन्त-रहित अर्थात् अनादि-अनन्त (काले) कालमें (जिणवयणं) जिनेन्द्र भगवान्के उपदेश-रूप वचनको (अलहंता) न पाये हुए (जीवा) जीव; (जोणि गहणंमि) योनियोंसे क्लेशरूप (भीसणे) भयङ्कर (इत्थ) इस संसारमें (चिरं) बहुत कालतक (भमिया) भ्रमण कर चुके और (भमिहंति) भ्रमण करेंगे ॥ ४९ ॥

ग्रन्थकारका उपदेश

ता संपइ संपत्ते,
मणुअत्ते दुल्लहे वि सम्मत्ते ।
सिरिसंतिसूरिसिट्ठे,
करेह भो उज्जमं धम्मे ॥ ५० ॥

(ता) इसलिये (संपइ) इस समय (दुल्लहे) दुर्लभ (मणुअत्ते) मनुजत्व—मनुष्य-जन्म और (सम्मत्ते) सम्यक्त्व (संपत्ते) प्राप्त हुआ है तो (सिट्ठे) शिष्ट—सज्जन पुरुषोंसे सेवित ऐसे (धम्मे) धर्ममें (भो) हे प्राणियो ! (उज्जमं) उद्यम—पुरुषार्थ (करेह) करो, ऐसा (सिरिसंतिसूरि) श्रीशान्तसूरि उपदेश देते ५० ॥

इस ग्रन्थमें जो कुछ जीवोंके स्वरूपके विषयमें कहा
गया है वह सिद्धान्तके अनुसार है।

एसो जीववियारो,
संखेवरुईण जाणणाहेउं ।
संखित्तो उद्धरिओ,
रुद्दाओ सुयसमुद्दाओ ॥ ५१ ॥

(संखेवरुईण) संक्षेप रुचियोंके—अल्पमतियोंके (जाणणाहेउं) जाननेके लिये (रुद्दाओ) रुद्र—अति विस्तृत (सुयसमुद्दाओ) श्रुतसमुद्रसे (एसो) यह (जीववियारो) जीवविचार (संखित्तो) संक्षेपसे (उद्धरिओ) निकाला गया है ॥५१॥

जीवविचारका सार।

व्यवहार से अच्छे या बुरे या दोनों तरह के कर्मों का करने वाला, इनके फलों का अनुभव करने वाला और इन को हटाने वाला और द्रव्य प्राणों को धारण करने वाला जीव कहलाता है। निश्चय से ज्ञान दर्शन चारित्र गुण सम्पन्न यानी चेतना लक्षण युक्त जीव कहलाता है।

जीव के दो भेद हैं—१ मुक्त (कर्मों से रहित) और २ संसारी (संसार चक्रमें घूमने वाला—कर्म सहित)।

संसारी जीवों के दो भेद हैं—१ त्रस (जो भयभीत होने पर एक जगहसे दूसरी जगह अपनी इच्छासे अपने आप जा सकें) और २ स्थावर (जो एक जगह पर ही रहें—चल फिर न सकें)।

त्रस जीवों के चार भेद हैं—१ द्वीन्द्रिय (स्पर्शन और रसना—दो इंद्रियों को धारण करने वाले), २ त्रीन्द्रिय (स्पर्शन, रसना और घ्राण—तीन इंद्रियों को धारण करने वाले), ३ चतुरिन्द्रिय (स्पर्शन, रसना, घ्राण और चक्षु—चार इंद्रियों को धारण करने वाले), और ४ पञ्चेन्द्रिय (स्पर्शन, रसना, घ्राण, चक्षु और कर्ण—पाँच इंन्द्रियों को धारण करनेवाले)।

स्थावर जीवोंके पाँच भेद हैं:—१ पृथ्वीकाय (जिस जीवका शरीर मिट्टी आदि का बना हो), २ अप्काय—जलकाय (जिस जीवका शरीर पानी का बना हो), ३ तेजःकाय—अग्निकाय—तेऊकाय

---

१ द्रव्य प्राण दश हैं:—पाँच इंद्रियाँ–१ स्पर्शन, २ रसना (जीभ), ३ घ्राण (नाक), ४ चक्षु (नेत्र–आँख), ५ कर्ण (कान), तीन बल–१ मन, २ वचन और ३ काय; ९ श्वासोच्छ्वास और १० आयुष्य (स्थिति).

(जिस जीवका शरीर आग का बना हो), ४ वाऊकाय—वायुकाय (जिस जीवका शरीर हवा—पवन का बना हो), और ५ वनस्पति-काय (जिस जीवका शरीर वनस्पति का बना हो) । ये पाँचों स्थावर एकेंद्रिय हैं ।

पृथ्वीकाय जीवोंके भेदः—स्फटिक रत्न, मणिं आदि रत्न, मूंगा, हिङ्गुल, हरताल, पारा, सोना, चाँदी, ताँबा, लोहा, राँगा, सीसा, जस्ता, खड़िया मिट्टी, लालरङ्गकी मिट्टी, पत्थरों से लगी हुई सफेद मिट्टी, पलेवक पत्थर, अभ्रक—भोडल, तूरी मिट्टी, क्षार पत्थर और मिट्टीकी अनेक जातियाँ, सुरमा, निमक आदि ।

अप्काय जीवोंके भेदः—भूमिका (कूआ, तालाव, नदी आदिका) जल, वर्षाका जल, ओस, बर्फ, गड़े—ओले, हरि वनस्पति परकी पानीकी बूँदे, घनोदधि (स्वर्ग और नरक पृथ्वीके आधारभूत जलीय पिण्ड—जलका समूह) इत्यादि ।

तेऊकाय जीवों के भेदः—ज्वाला रहित काष्टकी अग्नि (खीरा), ज्वाला (लपटें), गरम राखमें रहनेवाले अग्निके कण, आकाशसे होती हुई अग्निवर्षा, वज्रकी अग्नि, विजली आदि ।

वाऊकाय जीवोंके भेदः—आकाशमें उड़ानेवाली हवा, नीचे वहने-वाली हवा, गोलाकारमें वहनेवाली हवा, आँधी, मन्द २ हवा, गूँजनेकी आवाज जिसमेंसे निकलती हो वैसी हवा, घनवात (गाढ़ी हवा), तनुवात (तरल हवा—पतली हवा) आदि ।

वनस्पतिकाय जीवोंके दो भेद हैं:—१ साधारण वनस्पतिकाय (एक शरीरमें अनन्त जीवोंका समूह हो) और २ प्रत्येक वनस्पति-काय । (एक शरीरमें एक ही जीव हो)

साधारण वनस्पतिकायें[1]—अनन्तकाय जीवोंके भेद आलू, सूरन, मूली आदिके कन्द (जमीनमें उगनेवाले (अङ्कुर, नयी कोमल पत्तियाँ, पंचवर्णकी फुल्ली—काई, भूमिस्फोट, अद्रक, हरि हल्दी, कर्चूक, गाजर, नागरमोथा, वथुआ, थेग, सब तरहके कोमल फल (कोमल—जिनमें बीज न हों) जिनकी नसें, सँधें—गाँठें न दिखाई देती हों, थूहर, घीकुवार, गूगल, गिलोय आदि काटनेपर फिर उगनेवाली वनस्पतियाँ।

प्रत्येक वनस्पतिकायके भेदः—फल, फूल (पुष्प—कुसुम), छाल, काष्ट (घड़), मूलियाँ (जड़ें), पत्तियाँ और बीज।

द्वीन्द्रियके भेदः—शङ्ख, कौड़ी, कृमि, जलौका—जोंक, अक्ष (जिनका निर्जीव शरीर स्थापनाचार्यमें रक्खा जाता है), भूनाग, लालीयक (बासी रोटीमें उत्पन्न होनेवाले जीव), काष्टके कीड़े, जलके कीड़े आदि।

त्रीन्द्रियके भेदः—कानखजूरा (कनसला), खटमल, जूँ, चींटी (कीड़ी), दीमक, मकोड़ा, अल्ली, घृतमें पैदा होनेवाले जन्तु, चर्मजूँ, गोकीटकी जातियाँ, गौशाला आदिमें पैदा होनेवाले जीव, गोबरके कीड़े, विष्ठाके कीड़े, कुन्थुए, गोपालिका, चावल शक्कर आदि में पैदा होने वाले जीव आदि।

चतुरिन्द्रिय जीवोंके भेदः—बिच्छू, घुड़साल आदिमें पैदा होने वाले जीव, भौंरा, बर्रे, टिड्डी, मक्खी, मधुमक्खी, डाँस, मच्छर, कंसारी, मकड़ी आदि।

पञ्चेन्द्रिय जीवोंके चार भेद हैं:—नारक, तिर्यञ्च, मनुष्य और देव।

---

१ साधारण वनस्पतिकाय उस वनस्पतिको कहते हैं जिसमें नसें, सन्धियाँ, और गाँठें न हों और जो काट कर बोनेसे फिर उगे।

नारकके सात भेद हैं:—१ घमा, २ वंशा, ३ सेला, ४ अंजणा ५ रिहा, ६ मघा और ७ माघवती।

नारकीके सात गोत्र हैं:—१ रत्नप्रभा, २ शर्कराप्रभा, ३ वालुकाप्रभा, ४ पङ्कप्रभा, ५ धूमप्रभा, ६ तमःप्रभा और ७ तमस्तमःप्रभा।

तिर्यञ्चके तीन भेद हैं:—१ जलचर, २ थलचर और ३ खेचर।

जलचर (पानीमें चलनेवाले जीवों) के भेद:—शिशुमार, मछली—मत्स्य, कछुआ, ग्राह, मगर आदि।

थलचर (जमीनपर चलनेवाले जीव) के तीन भेद हैं:—१ उरःपरिसर्प (छातीसे चलने वाले—सर्पादि), २ भुजपरिसर्प (भुजाओंसे चलने वाले—न्योलादि), और ३ चतुष्पद (चार पैरोंसे चलने वाले—गाय, भैंसादि)।

खेचर (आकाशमें उड़ने वाले—नभचर) के दो भेद हैं:—१ रोमज (जिनके पङ्ख रोम—परसे बने हों) और २ चर्मज (जिनके पङ्ख चमड़ेके हों)। मनुष्योंका निवास जहाँ नहीं है वहाँ समुद्गत पक्षी (जिनकी पाँखें सिकुड़ी हुई हों) और विततपक्षी (जिनकी पाँखें फैली हुई हों) होते हैं।

मनुष्य तीन प्रकारके हैं:—१ कर्म भूमिज, २ अकर्म भूमिज, और ३ अन्तर्द्वीपज।

कर्म भूमियाँ (जहाँ असि—तलवार शस्त्र, मसी—स्याही कलम, और कृषि—खेती का कार्य हो) पंद्रह हैं:—पाँच भरत क्षेत्र, पाँच ऐरावत क्षेत्र और पाँच महाविदेह क्षेत्र।

अकर्म भूमियाँ (जहाँ असि, मसी और कृषिका कार्य न हो) तीस हैं:—५ हैमवन्त, ५ हिरण्यवन्त, ५ हरिवर्ष, ५ रम्यकू, ५ देवकुरु और ५ उत्तरकुरु।

अन्तर्द्वीप (जो भूमि समुद्रमें घुसी हुई हो) छप्पन हैं:—चूलहैमवन्त और शिखरी—इन दोनों पर्वतोंके पूर्व और पश्चिममें दो २ दंष्ट्राकार भूमियाँ लवण समुद्रमें चली गई हैं। ऐसे दोनों पर्वतोंकी आठ दंष्ट्रायें हुईं। हरएक दंष्ट्रापर सात २ अन्तर्द्वीप हैं। इस लिए कुल छप्पन अन्तर्द्वीप हुए।

मनुष्योंके निवास क्षेत्र १०१ हुए:—१५ कर्मभूमि, ३० अकर्मभूमि और ५६ अन्तर्द्वीप।

देवताओंके चार भेद हैं:—१ भवनपति, २ व्यन्तर, ३ ज्योतिष्क और ४ वैमानिक।

भवनपति देव दश प्रकारके हैं:—१ असुरकुमार, २ नागकुमार, ३ सुवर्णकुमार, ४ विद्युत्कुमार, ५ अग्निकुमार, ६ द्वीपकुमार, ७ उदधिकुमार, ८ दिशिकुमार, ९ वायुकुमार और १० स्तनितकुमार।

व्यन्तर देव सोलह प्रकारके हैं:—आठ वाण व्यंतर—१ अणपन्नी, २ पणपन्नी, ३ ऋषीवादी, ४ भूतवादी, ५ कन्दित, ६ महाकन्दित, ७ कोहण्ड और ८ पतङ्ग। आठ व्यन्तर १ पिशाच, २ भूत, ३ यक्ष, ४ राक्षस, ५ किन्नर, ६ किंपुरुष, ७ महोरग और ८ गंधर्व।

ज्योतिष्क देवोंके पाँच भेद हैं:—१ चंद्र, २ सूर्य, ३ ग्रह, ४ नक्षत्र और ५ तारा।

वैमानिक देवोंके दो भेद हैं:—कल्पोपन्न (तीर्थङ्करोंके जन्म आदि कल्याणकों में आने जाने, रक्षा करने आदि आचारोंका पालन करनेवाले) और कल्पातीत (उक्त आचारोंका पालन जिन्हें नहीं करना पड़ता है।)

कल्पोपन्न देवोंके बारह भेद हैं:—सौधर्म, २ ईशान, ३ सनत्कुमार, ४ माहेन्द्र, ५ ब्रह्म, ६ लान्तक, ७ शुक्र, ८ सहस्रार, ९ आनत, १० प्राणत, ११ आरण और १२ अच्युत।

कल्पातीत देव दो तरहके हैं:—१ ग्रैवेयक, २ अनुत्तरविमान।

ग्रैवेयक नव हैं:—सुदर्शन, २ सुप्रतिबद्ध, ३ मनोरम, ४ सर्वतोभद्र, ५ विशाल, ६ सुमनस, ७ सौमनस, ८ प्रीतिकार और ९ आदित्य।

अनुत्तर विमानके देव पाँच तरहके हैं:—१ विजय, २ वैजयन्त, ३ जयन्त, ४ अपराजित और ५ सर्वार्थसिद्ध।

संसारी जीवोंके पाँचसौ तिरसठ भेद उत्कृष्ट हैं:—नारकके १४, तिर्यञ्चके ४८, मनुष्यके ३०३ और देवोंके १९५ भेद हैं।

नारकके चौदह भेद:—घमा, वंशा, सेला, अंजणा, रिट्ठा, मघा और माघवती—ये सात पर्याप्त[1] और सात अपर्याप्त। कुल चौदह भेद हुए।

तिर्यञ्चके अड़तालीस भेद:—१ सूक्ष्म[2]पृथ्वीकाय, २ सूक्ष्म अप्काय, ३ सूक्ष्म तेउकाय, ४ सूक्ष्म वाउकाय, ५ सूक्ष्म साधारण वनस्पतिकाय, ६ वादर[3] पृथ्वीकाय, ७ वादर अप्काय ८ वादर तेउकाय, ९ वादर वाउकाय, १० वादर साधारण वनस्पतिकाय, ११ वादर प्रत्येक वनस्पतिकाय, १२ वेइंद्रिय, १३ त्रींद्रिय, १४ चतुरि-

१ जीव और पुद्गलकी उस शक्तिको पर्याप्ति कहते हैं जिसके द्वारा जीव और पुद्गल अन्य पुद्गलोंको ग्रहण कर दूसरे रूपमें बदल सकें। पर्याप्तियाँ छः हैं:—१ आहार, २ शरीर, ३ इंद्रिय, ४ श्वासोछ्वास, ५ भाषा और ६ मन। एकेन्द्रियके प्रथमकी चार पर्याप्तियाँ होती हैं। द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय और असंज्ञी (मनरहित जीव) पंचेन्द्रियके पाँच पर्याप्तियाँ होती हैं। संज्ञी (मन सहित) के छः पर्याप्तियाँ होती हैं। जिन जीवोंके जितनी पर्याप्तियाँ होती हैं उतनी पूर्ण कर लेनेपर वे जीव पर्याप्त कहलाते हैं। यदि पूर्ण करनेके पहिले या पूर्ण करते हुए ही मर जावें तो वे अपर्याप्त कहलाते हैं। २ जो नेत्रोंसे न दिखाई देवें। ३ जो नेत्रोंसे दिखाई देवें।

न्द्रिय, १५ गर्भज[1] जलचर तिर्यञ्च पञ्चेन्द्रिय, १६ गर्भज खेचर तिर्यञ्च पञ्चेन्द्रिय, १७ गर्भज उरःपरिसर्प स्थलचर तिर्यञ्च पञ्चेन्द्रिय, १८ गर्भज भुजपरिसर्प स्थलचर तिर्यञ्च पञ्चेन्द्रिय, १९ गर्भज चतुष्पद स्थलचर तिर्यञ्च पञ्चेन्द्रिय, २० संमूर्च्छिम[2] जलचर तिर्यञ्च, २१ संमूर्च्छिम खेचर तिर्यञ्च पञ्चेन्द्रिय, २२ संमूर्च्छिम उरःपरिसर्प तिर्यञ्च पञ्चेन्द्रिय, २३ संमूर्च्छिम भुजपरिसर्प तिर्यञ्च पञ्चेन्द्रिय, २४ संमूर्च्छिम चतुष्पद स्थलचर तिर्यञ्च पञ्चेन्द्रिय। ये चौवीस पर्याप्त और चौवीस अपर्याप्त। कुल तिर्यञ्चके अड़तालीस भेद हुए।

मनुष्यके ३०३ भेदः—१५ कर्मभूमि, ३० अकर्मभूमि और ५६ अन्तर्द्वीप। कुल १०१ भेद हुए। १०१ गर्भज पर्याप्त मनुष्य, १०१ गर्भज अपर्याप्त मनुष्य और १०१ संमूर्च्छिम अपर्याप्त मनुष्य। कुल मनुष्यके ३०३ भेद हुए।

देवके १९८ भेदः—१० भुवनपति, ८ व्यन्तर, ८ वाणव्यन्तर, ५ चरज्योतिषीदेव, ५ स्थिर ज्योतिष्कदेव, १० तिर्यग्जृम्भकदेव, १५ परमाधामीदेव, ३ किल्विषियादेव, ९ लोकान्तिकदेव, १२ कल्पोपन्नदेव, ९ ग्रैवेयक और ५ अनुत्तरविमान कुल ९९ भेद हुए। ९९ पर्याप्त और ९९ अपर्याप्त कुल देवोंके १९८ भेद हुए।

सिद्धों (मुक्तजीवों—जन्ममरण, कर्मसे रहित) के पंद्रह भेद हैं:— १ तीर्थसिद्ध, २ अतीर्थसिद्ध, ३ जिन सिद्ध, ४ अजिन सिद्ध, ५ स्वलिङ्ग सिद्ध, ६ अन्य लिङ्ग सिद्ध, ७ गृहीलिङ्ग सिद्ध, ८ स्त्रीलिङ्ग सिद्ध, ९ पुरुषलिङ्ग सिद्ध, १० नपुंसकलिङ्ग सिद्ध, ११ प्रत्येकबुद्ध सिद्ध, १२ बुद्धबोधित सिद्ध, १३ स्वयंबुद्ध सिद्ध, १४ एक सिद्ध और १५ अनेक सिद्ध।

---

1 गर्भसे पैदा होनेवाले जीव। 2 पुरुषस्त्रीके संयोगके बिना मलमूत्रादि १४ स्थानोंमें उत्पन्न होनेवाले जीव।

शरीर प्रमाणः—

सूक्ष्म पृथ्वीकाय, सूक्ष्म अप्काय, सूक्ष्म तेऊकाय, सूक्ष्म वाऊकाय, सूक्ष्म साधारण वनस्पतिकाय, वादर पृथ्वीकाय, वादर अप्काय, वादर तेऊकाय, वादर वाऊकाय और वादर साधारण वनस्पतिकाय का शरीर अङ्गुलके असंख्यातवें भाग (हिस्से) जितना होता है। प्रत्येक वनस्पतिकाय का शरीर एक हजार योजन से कुछ अधिक होता है। द्वीन्द्रिय का वारह योजन त्रीन्द्रिय का तीन कोस, चतुरिन्द्रियका एक योजनका शरीर होता है। सातवीं नारकीके जीवोंका ५०० धनुषका, छठीके २५० धनुषका, पाँचवींके १२५ धनुषका, चौथीके ६२॥ धनुषका, तीसरीके ३१। धनुषका, दूसरीके पंद्रह धनुष वारह अङ्गुलका और प्रथमके पौने आठ धनुष छः अङ्गुलका शरीर होता है। गर्भज मत्स्य और उरःपरिसर्पका शरीर एक हजार योजन होता है। गर्भज भुजपरिसर्पका शरीर दो कोससे लेकर नव कोसका होता है। गर्भज चतुष्पदका शरीर छ कोसका होता है। गर्भज पक्षियोंका शरीर दो धनुषसे लेकर नव धनुषका होता है। संमूर्च्छिम उरःपरिसर्पका शरीर दो योजनसे लेकर नव योजन तकका होता है। संमूर्च्छिम भुजपरिसर्प और पक्षियोंका शरीर दो धनुषसे लेकर नौ धनुषका होता है। संमूर्च्छिम चतुष्पदका शरीर दो कोससे लेकर नौ कोसका होता है।

मनुष्योंका शरीर तीन कोसका होता है। भुवनपति, व्यन्तर, ज्योतिष्क और कल्पोपन्न देवोंका में से प्रथमके दो देवलोकके देवोंका शरीर सात हाथका होता है। तीसरे और चौथे देवलोकके देवोंका शरीर छः हाथका होता है। पाँचवें और छठे देवलोकके देवोंका शरीर

---

[1] शरीर प्रमाण उत्सेधाङ्गुलसे गिनना चाहिए—देखो परिशिष्ट १

पाँच हाथका होता है। सातवें और आठवें देवलोकके देवोंका शरीर चार हाथ होता है। नवें, दसवें, ग्यारहवें और बारहवें देवलोकके देवोंका शरीर सिर्फ तीन हाथका होता है। नव ग्रैवेयकके देवोंकी देह दो हाथकी होती है, और अनुत्तर विमानके देवोंका शरीर मात्र एक हाथका होता है। संसारी जीवोंका जघन्यसे शरीर अङ्गुलके असंख्यातवें भागका होता है।

आयु प्रमाण:—

पृथ्वी काय की आयु बाईस हजार वर्षकी, अप् कायकी सात हजार वर्ष की, तेऊ काय की तीन रातदिनकी, वाऊ कायकी तीन हजार वर्ष की, वनस्पति कायकी दसहजार वर्ष की, द्वीन्द्रिय जीवोंकी बारह वर्ष की, त्रीन्द्रिय जीवोंकी उन्चास दिनकी, चतुरिन्द्रिय जीवोंकी छः मासकी, देवता और नारक जीवोंकी तेंतीस सागरोपमकी, गर्भज चतुष्पद तिर्यञ्च और मनुष्योंकी तीन पल्योपमकी, गर्भज जलचर, उरःपरिसर्प और भुजपरिसर्प की पूर्व—कोटि वर्षकी, गर्भज पक्षियों (खेचर) की पल्योपमके असंख्यातवें भाग की, सूक्ष्म एकेन्द्रिय, साधारण वनस्पति काय—सूक्ष्म और बादर, संमूर्च्छिम तिर्यञ्च पञ्चेन्द्रिय और मनुष्यकी आयु अन्तर्मुहूर्त की होती है। यह आयु (स्थिति) उत्कृष्टसे (ज्यादासे ज्यादा) बताई गई है।

संमूर्च्छिम जलचर की आयु पूर्वकोटि वर्षकी, संमूर्च्छिम चतुष्पद स्थलचर जीवोंकी चौरासी हजार वर्षकी, संमूर्च्छिम खेचर जीवोंकी आयु बहत्तर हजार वर्षकी, संमूर्च्छिम भुजपरिसर्प की त्रेपन हजार वर्षकी और संमूर्च्छिम भुजपरिसर्प की बयालीस हजार वर्षकी है।

---

१ परिशिष्ट १ देखो।

देव और नारक जीवोंकी जघन्य (कमसे कम) स्थिति दस हजार वर्षकी है। अन्य सब जीवोंकी जघन्य स्थिति अन्तमुहूर्त ही है।

स्वकाय स्थिति (अपनी कायामें उत्पन्न होना और मरना):—एकेन्द्रिय जीव असंख्यात उत्सर्पिणी और अवसर्पिणी तक अपनी कायामें उत्पन्न होकर मर सकते हैं। साधारण वनस्पति-काय अनन्त उत्सर्पिणी अवसर्पिणी तक अपनी कायामें उत्पन्न होना और मरना कर सकते हैं। द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय और चतुरिन्द्रिय संख्यात वर्षों तक मनुष्य और तिर्यञ्च सात-आठ भव तक अपनी कायामें उत्पन्न होकर मर सकते हैं। यह प्रमाण उत्कृष्ट (ज्यादासे ज्यादा) है। नारक जीव मरकर फिर तुरन्त ही नारकीमें पैदा नहीं होते हैं। देवता मरकर फिर तुरन्त ही देवगतिमें पैदा नहीं होते हैं। नारक मरकर देवगतिमें भी नहीं जा सकते हैं और देव मरकर नारक गतिमें भी नहीं जा सकते हैं।

प्राणद्वार:—

प्राण दो तरहके हैं:—द्रव्य प्राण और भाव प्राण। भाव प्राण आत्माके ज्ञानादि गुण हैं जो सब संसारी और मुक्त जीवोंके होते हैं। द्रव्य प्राण संसारी जीवोंके ही होते हैं। द्रव्य प्राण दश हैं:—१ स्पर्शन इंद्रिय (शरीर), २ रसना इंद्रिय (जीभ), ३ घ्राण इंद्रिय (नाक), ४ चक्षुइंद्रिय (आँख), ५ कर्णेन्द्रिय (कान), ६ श्वासोच्छ्वास, ७ आयुष्य, ८ मनबल, ९ वचनबल और १० काय बल।

एकेन्द्रियके चार प्राण हैं:—१ स्पर्शनइंद्रिय, २ श्वासोच्छ्वास, ३ आयुष्य ४ कायबल।

द्वीन्द्रियके छः प्राण होते हैं:—१ स्पर्शन इन्द्रिय, २ रसना इंद्रिय, श्वासोच्छ्वास, ४ आयुष्य, ५ वचन बल और ६ काय बल। त्रीन्द्रियके

सात प्राण हैं। १ स्पर्शन इंद्रिय, २ रसना इंद्रिय, ३ घ्राण इंद्रिय, ४ श्वासोच्छ्वास, ५ आयुष्य, ६ वचन वल और ७ काय वल।

चतुरिन्द्रियके आठ प्राण हैं:—१ स्पर्शन, २ रसना, ३ घ्राण, ४ चक्षु, ५ श्वासोच्छ्वास, ६ आयुष्य, ७ वचनवल और ८ कायवल।

असंज्ञी पञ्चेन्द्रियके नौ प्राण हैं:—१ स्पर्शन, २ रसना, ३ घ्राण, ४ चक्षु, ५ कर्ण, ६ श्वासोच्छ्वास, ७ आयुष्य, ८ वचनवल और ९ काय वल।

संज्ञी पञ्चेन्द्रियके दश प्राण हैं:—१ स्पर्शन, २ रसना, ३ घ्राण, ४ चक्षु, ५ कर्ण, ६ श्वासोच्छ्वास, ७ आयुष्य, ८ मन वल, ९ वचन-वल और १० काय वल।

योनिद्वार (जीवोंके उत्पत्तिस्थान कि जिसका वर्ण, गन्ध, रस और स्पर्श—ये चारों समान हों उत्पन्न होनेवाले जीवोंकी योनि कहलाता है।):—

पृथ्वीकाय जीवोंकी सात लाख, अप्काय जीवोंकी सात लाख, तेऊकाय और वायुकायकी सात सात लाख, साधारण वनस्पतिकाय की चौदह लाख, प्रत्येक वनस्पति कायकी दशलाख, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय और चतुरिन्द्रिय की दो लाख (हरेककी), तिर्यञ्च पञ्चेन्द्रिय, नारक और देवकी चार चार लाख और मनुष्यकी चौदह लाख योनियाँ होती हैं। कुल चौरासी लाख जीवयोनियाँ हैं।

जिन जीवोंने ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, मोहनीय, अन्तराय, वेदनीय, नाम, आयु और गोत्र—इन आठों कर्मोंका नाश करके अपने कार्यकी सिद्धि करली है अर्थात् मोक्षमें चले गये हैं उन्हें सिद्ध जीव

कहते हैं। उनके) न शरीर है, न आयु, न कर्म है न प्राण (द्रव्य) और न योनि। उनमें अनन्त ज्ञान, अनन्त दर्शन, अनन्त चारित्र, अनन्तवीर्य और अनन्त सुख हैं। उनकी स्थिति सादि अनन्त है— वे मुक्त होते हैं तब आदि गिनी जाती है। संसारमें वहाँसे वापिस नहीं आनेके कारण उनकी स्थिति अक्षय है (अनन्त है)।

परिशिष्ट १

(समय)

सूक्ष्ममें सूक्ष्म काल समय है।

असंख्याता समय = १ आवली

संख्यात आवली = १ उच्छ्वास

संख्यात आवली = १ निःश्वास

९ श्वासोच्छ्वास = १ थोव

७ थोव = १ लव

७७ लव = १ मुहूर्त
= ४८ मिनिट
= १,६७, ७७,२१६ आवली
= ३७७३ श्वासोश्वास

३० मुहूर्त = १ दिनरात

१५ दिनरात = १ पक्ष

२ पक्ष = १ मास

२ मास = १ ऋतु

३ ऋतु = १ अयन

२ अयन = १ वर्ष

८४ लाख वर्ष = १ पूर्वांग

८४ लाख पूर्वांग = १ पूर्व

असंख्यात वर्ष = १ पल्योपम

१० कोड़ाकोडी पल्योपम = १ सागरोपम

१० कोड़ाकोडी सागरोपम = १ उत्सर्पिणी

" " = १ अवसर्पिणी

२० कोड़ाकोडी सागरोपम = १ कालचक्र

अन्तर्मुहूर्त—९ समयसे लेकर १ समय कम दोघड़ी

अनन्तानन्त परमाणु — १ ओसण्ह सण्हिआं

अनन्त. परमाणु — १ सण्ह सण्हिआ

८ सण्हसण्हिआ – १ उर्द्धरेणु
८ उर्द्धरेणु – १ त्रसरेणु
८ त्रसरेणु – १ रथरेणु
८ रथरेणु – १ वालाग्र (देवकुरु, उत्तरकुरु के मनुष्यका)

८ वालाग्र – १ लीख	२ पाद – १ वालिश्त
८ लीख – १ जूँ	२ वालिश्त – १ हाथ
८ जूँ – १ जव	४ हाथ – १ धनुष
८ जव – १ उत्सेधाङ्गुल	२००० – १ कोस
६ उत्सेधाङ्गुल – १ पाद	४ कोस – १ योजन

प्रिंटर—एम्. एन्. कुळकर्णी, 'कर्नाटक प्रिंटिंग प्रेस,' ३१८ ए, ठाकुरद्वार, मुंबई.
पब्लिशर—कृष्णलाल वर्मा, मंत्री श्री पार्श्वचंद गच्छिय गणि श्री कुशलचंदजी पुस्तकालय, बिकानेरके लिए.

॥ शुभ सूचना ॥

—— : ० : ——

एण्ट्रेन्स तक पढ़नेवाले ओसवाल विद्यार्थीवर्गके लिए सुविधा।

बीकानेरमें "श्री भ्रातृभूषण जैन श्वेताम्बर बोर्डिङ्ग।"

यह बोर्डिङ्ग ओसवाल विद्यार्थियोंके श्रेयार्थ अभी खोला गया है और इसका सम्बन्ध "श्री जैन श्वेताम्बर पाठशाला" से है जिसमें एण्ट्रेन्स तककी पढ़ाई होती है। उपरोक्त बोर्डिङ्गमें भोजन व्ययके लिए केवल रु. १०) मासिक ही लिया जाता है। अतः आशा की जाती है कि ओसवाल विद्यार्थी इस संस्थासे पूरा २ लाभ उठावेंगे।

मन्त्री,
श्री जैन श्वेताम्बर पाठशाला,
बीकानेर।